RESEARCH COMMUNICATIONS
(An International Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary Online Journal)
https://research-communications.cmpcollege.ac.in
ISSN: 2584-1270
Volume: 2, Issue: 2, July-December 2024, pp. 81-87

संस्कृत रूपकों में विदूषक

विवेक कुमार

शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग

सी.एम.पी. पी. जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

E-mail: *vivekraj7869@gmail.com*

सारांश

विदूषक, नायक और नायिका तथा अन्य नाटकीय पात्रों के साथ मंच पर अभिनय करने वाले पात्रों में दिव्य पात्र है। वह रूपक का अनिवार्य हिस्सा होता है, जिसका मुख्य उद्देश्य थके हुए या चिंतित मन वाले प्रेक्षकों के लिए मनोरंजन और आनंद प्रदान करना है। विदूषक का प्रयोग रूपक में नायक के प्रणय सहायक के रूप में, प्रेम और वीरता से युक्त नाटकीय रचनाओं में मुख्य रूप से किया गया है। विदूषक के चार प्रकार- द्विज, ब्राह्मण, राजजीवी, शिष्य प्राप्त होते हैं। इनमें सबसे अधिक ब्राह्मण कोटि का विदूषक नाटकों में प्रयुक्त होते है। यह नायक का सहायक, सखा, तथा नर्मसचिव होता है। इसका प्रमुख कार्य अपने शारीरिक आकृति तथा वेशभूषा से, अपने उत्कृष्ट अभिनय कौशल से राजा तथा दर्शकों का मनोरंजन कराना है। इसके अतिरिक्त वह राजा का प्रणय सलाहकार का भी कार्य करता है। पूर्वरंग में विदूषक का कार्य कभी-कभी कथानक की पृष्ठभूमि का वर्णन करना, पात्र का परिचय देना, या सुखद स्थिति बनाना होता है। विदूषक ही एकमात्र नाटकीय पात्र है जो राजदरबार से लेकर अंतःपुर तक स्वच्छन्द विचरण करने के लिए स्वतन्त्र है। वह नायक का सखा तथा मंत्री दोनों है जो राजा के औपचारिक और अनौपचारिक सभी कार्यों तथा क्रियाओं में साथ रहता है और सहायक की भूमिका निभाता है।

कूट शब्द- *विदूषक, नाटक, अभिनय, मनोरंजन, पात्र, रूपक, नाट्यशास्त्र, कार्य, कलहप्रिय, ब्राह्मण।*

प्रस्तावना

संस्कृत रूपकों में विदूषक, जोकर या हास्य उत्पन्न करने वाला पात्र है, क्योंकि भरत ने उसे नायक और नायिका (नाटकीय पात्र) और अन्य पात्रों के साथ मंच पर अभिनय करने वाले पात्रों में दिव्य संरक्षण प्राप्त करने वाले पात्र के रूप में उल्लेख किया है[i]। विदूषक रूपक का अनिवार्य हिस्सा है। भरत स्वीकार करते हैं कि रूपक का मुख्य उद्देश्य थके हुए या चिंतित मन वाले प्रेक्षकों के लिए मनोरंजन और आनंद का साधन है, जिसका उद्देश्य महान नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का विकास करना है[ii]। विदूषक, मनोरंजन का साधन है, यह मूल्य स्पष्ट रूप से काव्यग्रन्थों में दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त प्रेम और वीरता से युक्त नाटकीय रचनाओं में मुख्य रूप में विदूषक को प्रस्तुत किया है।

भरत मानते हैं कि हास्य, जो विदूषक का मुख्य गुण है, प्रेम के निकटता से जुड़ी हुई है; इसलिए, विदूषक का प्रयोग रूपक में नायक के प्रणय सहायक के रूप में स्वाभाविक है।

विदूषक की उत्पत्ति

संस्कृत रूपक में इस पात्र का प्रयोग कब शुरू हुआ, यह न तो निश्चित है और न ही स्पष्ट। ए. बी. कीथ और अन्य विद्वानों ने ग्रीक और पश्चिमी नाटकों की तरह संस्कृत नाटक के लिए धार्मिक उत्पत्ति की परिकल्पना की है। वे मानते हैं कि विदूषक का उद्भव महाव्रत अनुष्ठान से हुआ है, जिसमें एक ब्रह्मचारी (व्रती, धार्मिक, विद्यार्थी) और एक वेश्या के बीच संवाद और गाली-गलौज होता है[iii]। अतः संस्कृत रूपक धार्मिक प्रवृत्ति और प्रभाव के तहत विकसित हुआ। धार्मिक प्रेरणा और धार्मिक उद्गम दो अलग बातें हैं। प्राचीन समय में जब धर्म मानव जीवन का एकमात्र शासक था, तब धार्मिक प्रेरणा और प्रभाव अनिवार्य थे। भारत में, हर ईमानदार गतिविधि, जिसमें कला भी शामिल थी, को ईश्वर की भक्ति के रूप में माना गया। नाट्यशास्त्र स्पष्ट रूप से संगीत, नृत्य और नाटक को पूजा के विभिन्न रूपों का वर्णन करता है[iv]; और कालिदास नृत्य को देवताओं के लिए 'दृश्य बलिदान' के रूप में वर्णित करते हैं[v]। अभिनय कला को एक दिव्य उद्गम देना, मानव जीवन में महत्त्व को स्थापित करना है। भारत में धार्मिक अनुष्ठान या प्रदर्शन हमेशा एक गंभीर और धार्मिक मामला रहा है; इसे कभी भी हास्यास्पद नहीं माना जा सकता, हालांकि किसी अपरिचित व्यक्ति को अनुष्ठान में कुछ अनुकरणीय या सूक्ष्म कृत्य हास्यप्रद लग सकते हैं। ब्रह्मचारी और वेश्या के बीच का संवाद एक गंभीर अनुष्ठान है जिसे न तो पैरोडी किया जा सकता है और न ही हंसी के लिए उपयोग किया जा सकता है। विदूषक की अवधारणा संभवतः धार्मिक अनुष्ठान से हुई होगी।

विदूषक के प्रकार

भरत चार प्रकार के विदूषकों का उल्लेख करते हैं: लिंगी या तपस, जो एक दिव्य नायक के साथ जुड़ा हुआ है; द्विज या ब्राह्मण, जो एक राज नायक का साथी है; राजजीवी या एक राजकीय कर्मचारी जो एक मंत्री (या व्यापारी) के साथ जुड़ा है; और शिष्य या विद्यार्थी जो एक ब्राह्मण आचार्य के साथ रहता है[vi]। वर्तमान संस्कृत नाटकीय साहित्य में, इन चार प्रकारों में से केवल ब्राह्मण और विद्यार्थी विदूषक ही जीवित रह गए हैं। ब्राह्मण कोटि का विदूषक नाटक, नाटिका और प्रकरण प्रकार के रूपकों में, और विद्यार्थी कोटि का विदूषक प्रहसन में प्राप्त होते हैं।

नाट्यलेखक विदूषक के इन प्रकारों की विशेषताओं का विस्तार से वर्णन करते हैं[vii]। लिंगी या तपस, देवताओं का विदूषक है जो व्यापक ज्ञान रखता है, वह किसी भी विषय के पक्ष और विपक्ष का निर्णय लेने में विशेषज्ञ होता है, वह पूरी तरह और यथार्थ रूप में नाट्यविद होता है, और उसमें हंसी और मजाक करने की क्षमता होती है। नारद, इस प्रकार के विदूषक का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये भास के अविमारक और बालचरित में और जगन्नाथ पंडित के रतिमन्मथा में प्रयुक्त है। नारद हास्य चरित्र के रूप में वास्तविक रूप से प्रकट नहीं होते हैं; फिर भी, वे खुद को 'कलहप्रिय' के रूप में घोषित करते हैं। वे देवताओं और राक्षसों के बीच संघर्ष को देखने में आनंद लेते हैं और हमेशा शांत स्वर्गीय जीवन को उबाऊ पाते हैं; इसलिए वे 'वैदिक अध्ययन के सत्रों के बीच' का समय बिताते हैं। नारद के व्यक्तित्व में यह हास्य तत्व स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि वह अपनी वीणा के तारों को कसकर लोगों के बीच झगड़े पैदा करते हैं। व्यापारी-नायक से जुड़ा हुआ विदूषक बदमाश माना जाता है; वह दिखने में कुरूप होता है; उसकी बोली और हावभाव अशिष्ट होती है। इस प्रकार का विदूषक अन्य नाटकीय ग्रंथों

में नहीं मिलता। शूद्रक के मृच्छकटिक का नायक ब्राह्मण व्यापारी चारुदत्त है। लेकिन उसका हंसी-मजाक करने वाला मित्र मैत्रेय इन गुणों (राजजीवी के) को धारण नहीं करता, हालांकि उसके सिर का आकार विकृत है और कभी-कभी वह अपनी वाणी में कठोर अभिव्यक्तियों का उपयोग करता है। मंत्री का विदूषक दूसरों की कमजोरियों को उजागर करने, गंदी भाषा में बात करने, और सुख की चाहत रखने वाली महिलाओं का मनोरंजन करने का भी काम करता है। इन गुणों में से कुछ को भास के प्रतिज्ञा-यौगंधरायण में विदूषक वसंतक के रूप में दिखाया गया है। शिष्य-प्रकार के विदूषक, जो अध्ययन सत्रों से बचता है और एक आनंदमय जीवन पसंद करता है, को बोधायन के प्रहसन भगवदज्जुकिया में दर्शाया गया है।

वर्तमान संस्कृत नाटकों में सबसे सामान्य प्रकार ब्राह्मण विदूषक का प्रयोग किया गया है, जो राज नायक का मित्र होता है। उसकी वाणी और बुद्धिमानी अपेक्षाकृत उच्च स्तर की होती है और उसमें सभ्य लोगों को भी हंसाने की क्षमता होती है। वह रानी की महिला परिचारिकाओं को पसंद आता है। वह स्वतंत्र रूप से अन्तःपुर में घूमता है और आपसी ईर्ष्या और प्रतिद्वंद्विता को बढ़ावा देता है। एक राजा के साथी के रूप में, वह राज नायक और उसकी प्रेमिका के बीच के प्रेम को प्रोत्साहित करता है। कभी-कभी वह जानबूझकर हास्य उत्पन्न करने के लिए अजीब तरीके से काम करता है। लेकिन उसके पास इतनी बुद्धिमानी है कि वह क्रोधित रानी को शांत कर सके या अपने मित्र, राज नायक की ओर से उस पर जीत हासिल कर सके।

भरत द्वारा वर्णित सभी गुणों को विदूषक के चरित्र में देखा जाना आवश्यक नहीं है क्योंकि शास्त्र इस पात्र के निर्माण के लिए सामान्य दिशा-निर्देश और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। बाद के सिद्धांतकारों ने पारंपरिक नाटककारों द्वारा प्रस्तुत विदूषक के गुणों को ध्यान में रखकर कई अन्य गुणों की कल्पना की। यह सत्य है कि नाटककारों ने स्वयं शास्त्र से प्रेरणा ली और अपने विदूषक को मनोरंजनकर्ता और मंच पर हास्य उत्पन्नकर्ता के रूप में उनकी भूमिका को ध्यान में रखते हुए कई अन्य गुणों या विशेषताओं को जोड़ा। जिसका सबसे अच्छा प्रयोग ब्राह्मण विदूषक के प्रदर्शन में प्राप्त होता है।

यह विदूषक, जो राज दरबार के शृंगारिक नाटकों में दिखाई देता है, जाति से ब्राह्मण होता है, और उसे उसकी वेश-भूषा के अतिरिक्त असली ब्राह्मण कहने का कोई आंतरिक गुण नहीं है। उसे गायत्री मंत्र याद नहीं होता; वह संस्कृत में नहीं, बल्कि प्राकृत भाषा में बोलता है; उसे वेदों की सही संख्या भी ज्ञात नहीं होता है। संतुष्ट (भास के अविमारक में) एक वर्ष के भीतर, नाट्यशास्त्र के पाँच श्लोकों को याद कर पाने का दावा करता है। विदूषक पढ़ने में असमर्थ होता है; लेकिन अगर वह लेखन में गलतियों का सामना करता है, तो वह बहाना करता है कि जिन अक्षरों की आवश्यकता है वे उस हस्तलेख में नहीं हैं जिसका उसने अध्ययन किया है। वह इतना संसाधनपूर्ण होता है कि बगीचे के कुएं पर जल्दी स्नान कर सकता है, वेद मंत्र बुदबुदाने का नाटक करता है, और रानी द्वारा दी जाने वाली भोजन और उपहारों से चूकने से बचने के लिए तेज़ी से अन्तःपुर की ओर चल पड़ता है। उसे महा-ब्राह्मण कहा जाता है, जिसका अर्थ है मूर्ख। लेकिन इससे उसे ब्राह्मण होने के कारण सम्मान और आदर की मांग करने से नहीं रोका जाता है। कालिदास के मालविकाग्निमित्र में प्रयुक्त गौतम, मालविका के नृत्य प्रदर्शन में दोष निकालता है क्योंकि वह ब्राह्मण-पूजा से शुरू नहीं हुआ था और मैत्रेय को चारुदत्त के पैर धोने के लिए कहे जाने पर उसको अच्छा नहीं लगता है।

ब्राह्मण होने के कारण, विदूषक खाने का शौकीन और भुक्खड़ होता है। एक दासी संतुष्ट को भोजन के निमंत्रण के साथ आसानी से मूर्ख बना देती है और एक मूल्यवान अंगूठी उससे प्राप्त कर लेती है।

कालिदास के मालविकाग्निमित्र में नायक द्वारा प्राप्त होने वाले स्वादिष्ट भोजन की संभावना पर वह एक शाही रहस्य प्रकट करता है। उसके लिए रसोई स्वर्ग है। वह चंद्रमा की तुलना एक टूटी हुई मीठी गोली से करता है; और राजा को पता चलता है कि विदूषक को भोजन के लिए एकमात्र मोह है। मैत्रेय समृद्ध चरुदत्त के घर के उन दिनों को याद करता है जब उसने भोजन के स्वाद का आनंद लेने के लिए कई व्यंजनों का आनन्द लिया था, जैसे एक चित्रकार जो अपनी कूची के साथ अलग-अलग रंगों को छूता है। भास के स्वप्नवासवदत्ता में वसंतक अपने पेट खराब होने पर अफसोस करता है क्योंकि यह स्थिति उसे एक अच्छी दावत का आनंद प्राप्त करने में बाधक है।

ब्राह्मण की ताकत उसकी वाणी में होती है, जो यह दर्शाता है कि वह शारीरिक रूप से डरपोक है। कई विदूषक, जैसे वसंतक और गौतम, सांपों से बहुत डरते हैं। मैत्रेय अंधेरी रातों से डरता है और जब तक कोई महिला परिचारिका साथ नहीं होती, बाहर जाने के लिए तैयार नहीं होता। हर्ष के नागानंद में अत्रेय मधुमक्खियों के हमले से पंगु हो जाता है। महल की दासियाँ भी विदूषक को डराती हैं, जैसा कि कालिदास के शाकुन्तल में माधव ने स्वीकार किया है। दासियाँ आमतौर पर विदूषक पर जीत हासिल करती हैं और उसे हंसी का पात्र बना देती हैं।

संस्कृत नाटककारों ने विदूषक के ब्राह्मण होने के दिखावे, वेदों और शास्त्रों के प्रति अज्ञानता, उसकी भुक्खड़पन और कायरता (जो कभी-कभी झूठे साहस के प्रदर्शन के रूप में व्यक्त की जाती है) का उपयोग हंसी उत्पन्न करने के लिए किया। समय के साथ ये तिरोहित होते चले गये। इसलिए बाद के नाटकों में, विदूषक की छवि रूढ़िवादी, यांत्रिक और सामान्य बन गई। कभी-कभी कुछ परिवर्तन मिलता है, जैसे हर्ष के नागानंद में, एक नशे में धुत विट, एक चेट और एक महल की दासी विदूषक को पूरी तरह से मूर्ख बना देते हैं और तमाल पत्तों के रस से उसका चेहरा काला कर देते हैं और उसे मंच से बाहर निकलने के लिए मजबूर कर देते हैं।

पुर्वरंग में विदूषक की भूमिका

नाटक के आवश्यक पात्र के रूप में विदूषक ने पूर्वरंग में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और दर्शकों के सामने एक नाटकीय अभिनय प्रस्तुत करने में मदद करता है। यह त्रिगत में पूर्वरंग के उन्नीसवें अंक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। यह सूत्रधार और उसके दो सहायक (परिपार्श्विक) के बीच वार्तालाप होता है। इसको प्रस्तुत करने के लिए विदूषक सहायक की भूमिका निभाता है, वह अचानक रंगमंच पर आता है, और एक संवाद शुरू करता है जो पहेलीपूर्ण, असंगत और हंसी उत्पन्न करने वाला होता है। विदूषक द्वारा पूछे गए प्रश्न अस्पष्ट होते हैं; लेकिन वे नाटक के कथावस्तु के निर्माण और इसके लेखक के विषय को पेश करने का कार्य करते हैं। भास के समय से ही नाटक और नाटककार की नियमित रूप से इसकी प्रस्तुति, प्रस्तावना में, पूर्वरंग के तुरंत बाद सूत्रधार द्वारा शामिल की जाती थी[viii]। इस प्राचीन प्रथा के कुछ प्रमाण सोलहवीं शताब्दी का नाटक, भास के चारुदत्त, शूद्रक के मृच्छकटिक है, जहाँ सूत्रधार और विदूषक नाटककार और उसके नाटक का परिचय देते हैं, जिसे महादेव के मराठी नाटक अद्भुतादर्पण के प्रथम चरण की रंगमंचीय प्रथा में भी शामिल किया गया है। विकास की प्रक्रिया में इस प्राचीन प्रथा को नाटककारों ने अपने प्रस्तावना द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया, जिसमें सूत्रधार और उसकी पत्नी (नटी), या उसके सहायकों में से एक ने नाटक और नाटककार का परिचय देने में भाग लेने लगे। इसमें केवल नांदी और प्ररोचना जैसे पूर्वरंग के विस्तृत तत्वों का प्रयोग होने लगा, और पहले दृश्य के उद्घाटन का संकेत देने के लिए भरत के सिद्धांत के अनुसार कुछ विशेष नाटकीय युक्तियों का भी उपयोग किया गया।

विदूषक के कार्य

विदूषक का नाटकीय कार्य, तकनीकी कार्य नहीं, बल्कि अधिक महत्वपूर्ण कार्य है, जो संस्कृत नाटक को उत्कृष्ट बनाता है। भरत कहते हैं कि हास्य (हास) शृंगार से उत्पन्न होता है। यह तब संभव होगा जब प्रेम के प्रदर्शन में अनुपयुक्त या हास्यास्पद तत्व शामिल हो। भरत के कथन के अनुसार राजा और विदूषक के बीच स्थापित मित्रवत सम्बोधन (वयस्य) से भी हास्य उत्पन्न होता है । नाटक के पारंपरिक संदर्भ में, विदूषक को राजा के साथी के रूप में रोमांटिक हास्य नाटकों में एक निश्चित स्थान प्राप्त है। बाद के नाट्य सिद्धांतों में भी विदूषक की भूमिका और कार्य को दृढ़ता से स्थापित किया गया है, जिससे यह कहा जा सकता है कि नाटकों में विदूषक को अक्सर काम-सचिव या नर्म-सचिव, राजा का प्रिय साथी या मंत्री के रूप में वर्णित किया गया है।

विदूषक का कार्य दोहरा होता है, वह प्रेम कहानी में नायक का साथी होता है। वह नायक की नायिका के प्रति अधूरे प्रेम को पूरा करने में सहायता करता है। और ऐसे क्षणों में जब प्रेम में दुःख, संकोच और अलगाव होता है, वह हास्य से युक्त अपनी वाणी और व्यवहार से नायक को सान्त्वना और उत्साह प्रदान करता है। नाटककार कहानी की प्रमुख् भूमिका में स्वाभाविक रूप से विदूषक का उपयोग करते हैं। क्योंकि विदूषक, जैसे कालिदास के गौतम, नायक को नायिका से मिलने के लिए चतुर योजनाओं के माध्यम से सक्रिय रूप से कथानक को आगे ले जाने में सहायता करता है।

विदूषक का सबसे महत्वपूर्ण कार्य, निस्संदेह, हँसी प्रदान करना है। भरत के अनुसार, विदूषक तीन तरीकों से हास्य उत्पन्न करता है[ix]: अपने शरीर से, अपने पहनावे से और अपनी वाणी से। पहला और दूसरा विदूषक के मंचीय प्रदर्शन से संबंधित है। यदि विदूषक को विकृत व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाए, जैसे कि उभरी हुई दाँतों के साथ, गंजे, कूबड़ वाले, लंगड़े या विकृत व बदसूरत चेहरे वाले के रूप में, तो उसकी शारीरिक उपस्थिति हँसी का स्रोत बन जाती है। यह याद रखना चाहिए कि यह सब मंचीय मेकअप का हिस्सा होता है। प्राचीन भारतीय नाटकों में विदूषक का चित्रण उनके शरीर के किसी न किसी विकार या कुरूपता के विवरण से होता है। कालिदास के विदूषक की तुलना भूरे बंदर से की जा सकती है। शूद्रक के मैत्रेय का सिर ऊंट के घुटने जैसा है, और उसके सिर पर कौवे के पैरों जैसे दो पक्ष बाल हैं। राजशेखर का विदूषक गंजा है। विदूषक की चाल भी विशेष होती है, जैसे कि वह सारस की तरह चले, अपनी आँखें ऊपर घुमाए और लोट-पोट हो, या अपनी टेढ़ी छड़ी (कुटिलक) को लहराते हुए अत्यधिक लंबे-लंबे कदम उठाए; उसकी हरकतें निश्चित रूप से हास्य पैदा करती हैं। विदूषक की वेश-भूषा का विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं है। नाट्यशास्त्रीय सिद्धान्त में उसकी वेश-भूषा में बांस और खालों का उपयोग, बहुत ही ढीले से बंधा हुआ धोती, और काले कालिख, राख या लाल चाक से बनी रेखाओं वाला चेहरा उल्लेखित है। ब्राह्मण प्रकार के विदूषक की टोपी, विशेष रूप से, नाटकीय प्रथा में प्रयोग में आ सकती है[x]।

इन नाटकीय साधनों के अलावा, असली हास्य स्रोत विदूषक के बेतुके, असंगत लेकिन चतुर संवादों से आता है। हालांकि वह अक्सर उपहास का पात्र और दूसरों के लिए हंसी और मनोरंजन का स्रोत होता है, विदूषक में इंसान के जीवन के अजीबोगरीब पहलुओं पर ध्यान देने की विशेष क्षमता होती है और वह इसे बुद्धिमत्ता और हास्य के साथ व्यक्त करता है। जिस प्रकार गौतम नृत्य करने वाले नटों का मजाक उड़ाते हैं और यहां तक कि राजा अग्निमित्र का वर्णन भी इससे पुष्ट होता है। वह अग्निमित्र की तुलना उस गिद्ध से करता है जो रसोई के ऊपर मंडराता है, पका हुआ मांस पाने के लिए लालायित होता है लेकिन प्रवेश करने से डरता है।

नटों को मजदूरी और उपहार देने की कला सिखाने के तहत एक तमाशा बताया गया है; वे ऐसे हैं जैसे दो मेढ़े या हाथी एक-दूसरे के सिर पर धावा बोल रहे हों। जब अग्निमित्र अपनी छोटी रानी की यात्रा से हैरान होता है, जबकि वह प्रेम प्रस्तावों में व्यस्त होता है, तो वह विदूषक की ओर रुख करता है, और गौतम उसे सलाह देता है, 'भाग जाओ!'। वसंतसेना की माँ के मोटापे और विशाल आकार के बारे में बात करते हुए, मैत्रेय सोचता है कि वह महल के दरवाजे से अंदर कैसे घुसी होगी और खुद ही उत्तर देता है कि महल की दीवारें उसके चारों ओर बनी होंगी।

कभी-कभी विदूषक की टिप्पणियां मनोरंजन से बढ़कर होती हैं; वे मानव स्वभाव की गहरी टिप्पणी होती हैं। उदाहरण के लिए, राजा पुरूरवा जब पूर्णिमा की रात को अपने महल की छत पर उर्वशी को लाता है, तो यह भूलते हुए कि वे अकेले नहीं हैं, उसे अपनी सिंहासन का आधा हिस्सा पेश करता है। विदूषक तुरंत पूछता है, 'क्या आप दोनों ने अभी-अभी अपनी रात शुरू की है?'। मैत्रेय एक नर्तकी के इरादों को संदिग्ध मानता है और उसे जूते में फंसी हुई कंकड़ की तरह बताता है; भले ही कंकड़ हटा दी जाए, चोट जारी रहती है। अतः विदूषक शेक्सपियर के टचस्टोन के समान है। विदूषक कभी-कभी मसखरे की टोपी पहनकर, मानव जीवन की विसंगतियों और विचित्रताओं का आलोचक बनकर आगे बढ़ता है।

विदूषक के अन्य कार्य

एक नाटक के पात्र के रूप में विदूषक का कार्य कभी-कभी कथानक की पृष्ठभूमि का वर्णन करना, पात्र का परिचय देना, या सुखद स्थिति बनाना होता था। प्राचीन संस्कृत मंच सहायक उपकरण के दृश्य व्यवस्था के सम्बन्ध में व्यावहारिक रूप से खाली था। इसलिए पहले से ही मंच पर उपस्थित विदूषक के माध्यम से या कथानक निर्माण के तकनीकी उपकरणों के माध्यम से इस खालीपन को भरा गया।

विदूषक सामान्यतः राजकुमार के संदेशवाहक के रूप में भी कार्य करता है और उसके रहस्यों का संरक्षक भी है। समय के साथ विदूषक ने दरबारी विदूषक की भूमिका भी निभानी शुरू कर दी। राजशेखर के नाटकों में इस पेशेवर भूमिका का स्पष्ट संकेत मिलता है जिसे विदूषक ने निभाया। इस क्षमता में विदूषक अक्सर दरबारी जीवन और शाही जीवन का आलोचक बनकर उभरता है।

नाटककार कभी-कभी विदूषक का उपयोग अपने नाटकीय कथानक को बनाने के लिए करते हैं, जैसा कि भास ने अपने दो उदयन पर आश्रित नाटकों में किया है। वहीं दूसरी ओर, कालिदास अपनी शकुंतला में विदूषक की अनुपस्थिति को एक नाटकीय स्थिति में कुशलतापूर्वक व्यवस्थित करके कथानक को विकसित करते हैं।

विदूषक एक महत्वपूर्ण नाटकीय कार्य को पूरा करता है, जो एक भावनात्मक रूप से तनावपूर्ण या दुखद स्थिति में हास्य के माध्यम से राहत प्रदान करने का है। भास, कालिदास और शूद्रक के नाटक इस बात की पुष्टि करते हैं कि एक हास्य पात्र किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए होता है।

सन्दर्भ सूची

1. नाट्यशास्त्र, गायकवाड ओरिएंटल सीरीज, खंड -1
2. मालविकाग्निमित्रम्-कालिदास,
3. Sanskrit Drama, Keith, Oxford University Press, 1926.

4. The Vidusaka, G.K. Bhat, The New Order Book Co., Ellis Bridge, Ahemdabad, 1959.
5. विदूषक की टोपी, डॉ. मिराशी अभिनंदन ग्रंथ, विदर्भ संशोधन मंडल, नागपुर, 1965. पृष्ठ 336-343.

[i] नाट्यशास्त्र, गायकवाड ओरिएंटल सीरीज।
[ii] वही।
[iii] संस्कृत ड्रामा, कीथ।
[iv] नाट्यशास्त्र, गायकवाड ओरिएंटल सीरीज।
[v] मालविकाग्निमित्रम्. I.5.
[vi] नाट्यशास्त्र, गायकवाड ओरिएंटल सीरीज।
[vii] द विदूषक, अध्याय IX
[viii] द विदूषक, अध्याय 9 , भारत-नाट्य-मंजरी, परिचय, पृष्ठ 65-67।
[ix] नाट्यशास्त्र, गायकवाड ओरिएंटल सीरीज।
[x] विदूषक की टोपी, देखें, डॉ. मिराशी अभिनंदन ग्रंथ, विदर्भ संशोधन मंडल, नागपुर, 1965. पृष्ठ 336-343